eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

संगीत कला भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यमः एक विवेचन

[1]अलका सिंह
[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर (संगीत) दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

Received: 25 September 2023 Accepted and Reviewed: 30 September 2023, Published : 01 Nov 2023

Abstract

संगीत एक भावप्रधान कला है अथवा कहा जाए कि संगीत भावों की अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। संगीत एक त्रिवेणी संगम है जहाँ गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं का समागम होता है। यह तीनों विधाऐं स्वतंत्र रूप से, तथा सम्मिलित रूप से सभी प्रकार की भावाभिव्यक्ति में समर्थ है। यदि हम संगीत की उत्पत्ति पर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि अनेकों मनोवैज्ञानिकों तथा संगीत तत्वज्ञाताओं ने भावों की अभिव्यक्ति पूर्ति हेतु संगीत की उत्पत्ति का समर्थन किया है अर्थात् मानव–मन में जब भावों को प्रकट करने की इच्छा उत्पन्न हुई तभी संगीत का जन्म हुआ। मानव–मन के किसी भी भाव को प्रकट करने हेतु चाहे वह भाव श्रृंगार संयोग हो अथवा वियोग, हास हो, विषाद हो, क्रोध हो, पश्चाताप हो सभी भावों को संगीत के माध्यम से सफलतापूर्वक अभिव्यक्त किया जा सकता है। गीतों के माध्यम से अथवा वाद्य पर पड़ने वाली थाप अथवा आघात के माध्यम से अथवा पैरों में बंधे हुए घुँघरुओं के माध्यम से उत्पन्न होने वाला भाव सीधे श्रोता के ह्रदय को प्रभावित करता है तथा यह प्रभाव बहुत लम्बे समय तक मानव–मन पर अपनी छाप बनाए रखता है यही कारण है कि आज भी हम पुराने गीत आदि सुनना पसंद करते हैं। संगीत एक ललित कला है। ललित कला से आशय है मानव मन को प्रभावित करने वाली कला। मानव मन तो भावों का घर है। यहाँ प्रतिक्षण नवीन भाव आते–जाते रहते हैं। अतः इस घर को सुन्दरता मात्र संगीत से ही प्रदान की जा सकती है। आप सभी लोगों ने कभी–न–कभी महसूस किया होगा कि विरह गीत सुनते–सुनते हमारे भी नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हो जाती है अथवा वीर रस प्रधान गीत सुनते ही हम सब उत्साह से परिपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि यह उदाहरण है इस बात का कि संगीत कितनी सफलतापूर्वक हमारे ह्रदय में छिपे भावों को प्रकट कर देता है।

मुख्य शब्द– संगीत, अभिव्यक्ति, माध्यम, श्रोता, ललित कला

Introduction

मनुष्य एक विचारशील प्राणी है उसके मस्तिष्क में नित नवीन विचार आते–जाते रहते हैं। मानव मस्तिष्क के इन विचारों के जनक उसके ह्रदय में उत्पन्न होने वाले भाव होते हैं। जैसा भाव मन में आता हैं वैसा ही मस्तिष्क में विचार आता जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि मनुष्य के क्रिया–कलाप उसके भावों से प्रेरित होते हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि भाव कहाँ से तथा कैसे उत्पन्न होते हैं तो इसका उत्तर है संगीत। संगीत वह कला है जो न मात्र भावों को उत्पन्न करने में सहायक है वरन् भावों का अभिव्यक्त करने में तथा भावों का आदान प्रदान करने में भी सहायक है। सूक्ष्म रूप से देखा जाए तो भावों को परिष्कृत तथा व्यवस्थित करने में संगीत सहायक कला है। संगीत में काव्य तत्व तथा राग तत्व एक साथ विद्यमान रहता है। जिसके चलते संगीतज्ञ भावों को काव्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

के साँचे में ढालकर राग स्वरों से अलंकृत कर जब श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करता है तो उसके प्रभाव से पाषाण ह्रदयी मनुष्य भी प्रभावित हो ही जाता है।

''गायन, वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीतम् मुच्यते''

अर्थात् गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं का मिलन ही संगीत है। यद्यपि यह कथन सत्य तथा प्रमाणिक है कि गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं की जब एक साथ प्रस्तुति की जाती है तो भावाभिव्यक्ति सर्वाधिक श्रेष्ठ तथा सरलतापूर्वक होती है परन्तु इस कथन को भी नकारा नहीं जा सकता है कि गायन, वादन तथा नृत्य ये तीनों विधाऐं स्वतंत्र रूप से भी अपनी प्रस्तुति के माध्यम से सफल भावाभिव्यक्ति में सक्षम हैं।

गायन क्रिया में प्रयुक्त प्रत्येक स्वर का अपना एक रस से सम्बन्ध है तथा रस का अपना एक भाव है। इसी प्रकार रागों का भी रसों तथा भावों से विशेष सम्बन्ध होता है। यही कारण है कि जब अमुक राग का गायन किया जाता है तब रागजन्य रस की उत्पत्ति श्रोता के ह्रदय में जागृत होने लगती हैं तथा वह भावसागर में गोते खाने लगता है।

वादन क्रिया में प्रयुक्त होने वाली तालों तथा लयों का भी विभिन्न रसों से सम्बन्ध होता है। यही कारण है कि जब वादक कहरवा, दादरा आदि तालों का वादन करता है तब श्रृंगार, भक्ति आदि भाव श्रोता के ह्रदय में जागृत होने लगते हैं तथा रूद्र ताल, सवारी ताल आदि के माध्यम से गम्भीर भाव प्रकट होने लगते हैं। इसी प्रकार लयों का भी अपना एक प्रभाव होता है जब प्रस्तुति द्रुत, मध्य–द्रुत लय में होती है तब श्रृंगार, हास, वीर आदि रसों की अभिव्यक्ति होती है इसी प्रकार जब प्रस्तुति विलम्बित तथा विलम्बित–मध्य लय में होती है तब शांत, वियोग, करुण आदि रसों की अभिव्यक्ति होने लगती है।

नृत्य विधा तो भावों को जीवन्त मंच पर प्रदर्शित करने वाली कला है। नृत्यक के घुंघरुओं की झंकार, उसकी विभिन्न भाव–भंगिमाएँ तथा मुद्राएँ सभी कुछ विभिन्न भावों को प्रदर्शित करती हैं। नृत्य एक ऐसी विधा है जिसमें यह कहा जा सकता है कि नृत्यक का अपना व्यक्तित्व रह ही नही जाता है वरन् जब वह अपनी कला प्रदर्शित कर रहा होता है उस समय मंच पर कलाकार नहीं वरन् भाव मूर्त रूप में होते हैं। नृत्य विधा के माध्यम से भावाभिव्यक्ति के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसमें एक साथ एक से अधिक भावों की सफल अभिव्यक्ति की जा सकती है। कलाकार अपनी भाव–भंगिमाओं तथा मुद्राओं के माध्यम से एक पल में संयोग श्रृंगार तो दूसरे ही पल में वियोग श्रृंगार प्रदर्शित कर सकता है कलाकार कही रौद्र भाव तो दूसरे ही पल करुणा सागर में दर्शक को डुबा देता है।

अनेकों वैज्ञानिक शोधो के माध्यम से यह प्रमाणित किया जा चुका है कि संगीत के माध्यम से सफल भावाभिव्यक्ति की जा सकती है जिसका प्रभाव न मात्र मनुष्यों वरन् पशु–पक्षियों तथा पेड़–पौधों पर भी पड़ता है। संगीत चिकित्सा पद्धति का जन्म तथा उसका विकास तथा प्रचलन संगीत द्वारा सफल भावाभिव्यक्ति का ही सबल प्रमाण है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

संगीत मात्र एक कला अथवा विषय नहीं है वरन् संगीत एक साधना है। यह जीवन के आदि से अन्त तक व्याप्त रहने वाली ऊर्जा है। यह न मात्र भावों की अभिव्यक्ति में सहायक है, वरन् यह दूसरे के भावों को समझने की शक्ति भी प्रदान करता है। संगीत के माध्यम से ऐसा कोई भाव नहीं है जो प्रकट न किया जा सकता हो बल्कि यह कहना चाहिए कि संगीतमय अभिव्यक्त भाव का प्रभाव चिरकालिक तथा व्यापक होता है। संगीत के माध्यम से अभिव्यक्त किए गए भाव का प्रभाव शिशुओं से लेकर वृद्धों तक सभी पर पड़ता है। यही कारण है कि छोटे–छोटे बच्चे भी लोरी के रूप में संगीत सुनना पसन्द करते हैं। ध्वनि के प्रति मनुष्य का आकर्षण सदैव ही रहा है परन्तु जब ध्वनि को संगीत से आभूषित कर दिया जाता है तब यह संगीतमय ध्वनि विशेष सौन्दर्य से परिपूर्ण हो जाती है जिसका प्रभाव हृदय की गहरी तहों तक समा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 आचार्य बृहस्पति (1976), संगीत चिंतामणि, हाथरस, संगीत कार्यालय।
1. अहोबल (1971), संगीत पारिजात, हाथरस, संगीत कार्यालय।
2. उप्पल, सविता (2003), संगीत शिक्षण एवं मनोविज्ञान, चण्डीगढ़, मॉडर्न बुक हाउस।
3. कुलकर्णी, वसुधा (1990), भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
4. चक्रवर्ती, कविता (1990), संगीत की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, जोधपुर, राजस्थानी ग्रन्थागार।
5. चौधरी, सुभद्रा (1984), भारतीय संगीत में ताल और रूप–विधान : लक्ष्य–लक्षणमूलक अध्ययन, अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स।
6. जैन, विजयलक्ष्मी (1989), संगीत दर्शन, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
7. जौहरी, सीमा (2003), संगीतायन, दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स।
8. जायसवाल, सीताराम (1998), शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र।
9. जोशी, उमेश (1984), भारतीय संगीत का इतिहास, फिरोजाबाद, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान।
10. तिवारी, किरन (2015), संगीत एवं मनोविज्ञान, नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स।
11. बसंत (स0 लक्ष्मी नारायण गर्ग, 2004), संगीत विशारद, हाथरस, संगीत कार्यालय।
12. बृजनारायण (1979), वर्तमान संदर्भ में संगीत, संगीत, हाथरस, संगीत कार्यालय।
13. शर्मा, महारानी (2014), संगीत चिकित्सा, नई दिल्ली, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रब्यूटर्स।
14. सिंह, राजेन्द्र प्रसाद (2014), भारतीय संगीत का समाजशास्त्रीय सन्दर्भ, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।